आईआईआरएस के बारे में

भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान (भा.सु.सं.सं.), भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संस्थान के अन्तर्गत एक प्रमुख संस्थान है जो पिछले छह दशकों से प्राकृतिक संसाधनों की निगरानी और आपदा प्रबंधन के लिए भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी के उपयोग पर प्रशिक्षण, शिक्षा और क्षमता निर्माण में कार्यरत है।

पाठ्यक्रम के विषय में

पुरा-वाहिनियाँ (पैलियोचैनल) उन नदियों या धारा चैनलों के अवशेष हैं जो अतीत में बहती थीं और वर्तमान में युवा नदी तलछट से भर गई हैं या दबी हुई हैं। पेलियोचैनल अध्ययन समुद्र-स्तर में परिवर्तन से पहले पिछले बाढ़ के मैदान की गतिविधियों, पेलियोक्लाइमैटिक स्थितियों और मुहाना और जलोढ़ निक्षेपण प्रतिक्रियाओं के बारे में जानकारी प्रदान कर सकता है। पैलियोचैनल का पता लगाने के लिए कई तकनीकें हैं, जिनमें से प्रत्येक के अपने फायदे और नुकसान हैं। रिमोट सेंसिंग-आधारित दृष्टिकोण में उच्च-रिज़ॉल्यूशन ऑप्टिकल, माइक्रोवेव और थर्मल डेटासेट, लिडार व्युत्पन्न ऊंचाई मानचित्र और ग्राउंड-पेनेट्रेटिंग रडार (जीपीआर) जैसी भूभौतिकी तकनीकें शामिल हैं। कार्यशाला पैलियो चैनल पहचान में भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी के उपयोग पर केंद्रित होगी।

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

कार्यशाला में पेलियोचैनल अध्ययन के लिए भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी के उपयोग से संबंधित निम्नलिखित विषयों को शामिल किया जाएगा:

- **पेलियोचैनल्स की रिमोट सेंसिंग: एक अवलोकन**
- **दबे हुए पेलियोचैनलों का पता लगाना एवं सक्रिय टेक्टोनिक्स के साथ लुप्त लिंक को उजागर करने के लिए जल निकासी नेटवर्क का पुनर्निर्माण**
- **पैलियोचैनल्स की माइक्रोवेव रिमोट सेंसिंग**
- **अंतरिक्ष एवं भू आधारित सेंसर के उपयोग द्वारा सरस्वती पैलियोचैनल का अध्ययन**
- **लुप्त हो चुकी सरस्वती नदी के प्रवाह की विशेषताएँ**

पाठ्यक्रम शुल्क

इस पाठ्यक्रम में भाग लेने के लिए कोई पाठ्यक्रम शुल्क नहीं है।

लक्षित प्रतिभागी

यह पाठ्यक्रम, केंद्र/राज्य सरकार/ निजी संगठन/एनजीओ में कार्यरत कार्मिक/छात्र/शोधकर्ता के लिए विकसित किया गया है जो की पेलियो चैनल अध्ययन, भूजल अध्ययन, भूवैज्ञानिक और पुरातत्व अध्ययन के क्षेत्रों में अनुसंधान कर रहे हैं।

अपेक्षित परिणाम

कार्यशाला के पूरा होने के बाद प्रतिभागियों को पेलियोचैनल की पहचान में भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी के विभिन्न अनुप्रयोगों से परिचित कराया जाएगा और क्षेत्र में भविष्य के अनुसंधान के दायरे के बारे में भी पता चलेगा।

पाठ्यक्रम पंजीकरण

- पाठ्यक्रम के विषय में जानकारी और अन्य विवरण URL- http://www.iirs.gov.in/Edusat-News/ पर उपलब्ध होंगे।
- सभी प्रतिभागियों को उपरोक्त वेब पेज लिंक पर उपलब्ध पंजीकरण पृष्ठ के माध्यम से ऑनलाइन पंजीकरण करना होगा।

पाठ्यक्रम में कैसे भाग लें

- नोडल सेंटर प्रतिभागी पाठ्यक्रम में भाग आईआईआरएस, देहरादून के ई-क्लास पोर्टल यानी https://eclass.iirs.gov.in के माध्यम से ले सकते हैं।
- व्यक्तिगत प्रतिभागी पाठ्यक्रम में भाग एलएमएस यानी https://isrolms.iirs.gov.in के माध्यम ले सकते हैं।

सम्पर्क करने का विवरण

डॉ. हरीश कर्नाटक
प्रमुख, भू-वेब सेवाएँ, सूचना प्रौद्योगिकी और दूरस्थ अधिगम विभाग
ईमेल : harish@iirs.gov.in

डॉ. पूनम एस तिवारी
कार्यक्रम समन्वयक
आईआईआरएस आउटरीच कार्यक्रम
फ़ोन: 0135-2524334
ईमेल : poonam@iirs.gov.in

आईआईआरएस डीएलपी टीम
श्री जनार्दन विश्वकर्मा
और
श्री अशोक घिल्डियाल
फ़ोन: 0135-2524130
ईमेल : dlp@iirs.gov.in

आईआईआरएस आउटरीच कार्यक्रम

पुरा-वाहिनी (पेलियोचैनल) अध्ययन में भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग: वर्तमान क्षमताएँ और भविष्य के रुझान पर लघु पाठ्यक्रम- २०-२४मई, २०२४

इसरो isro

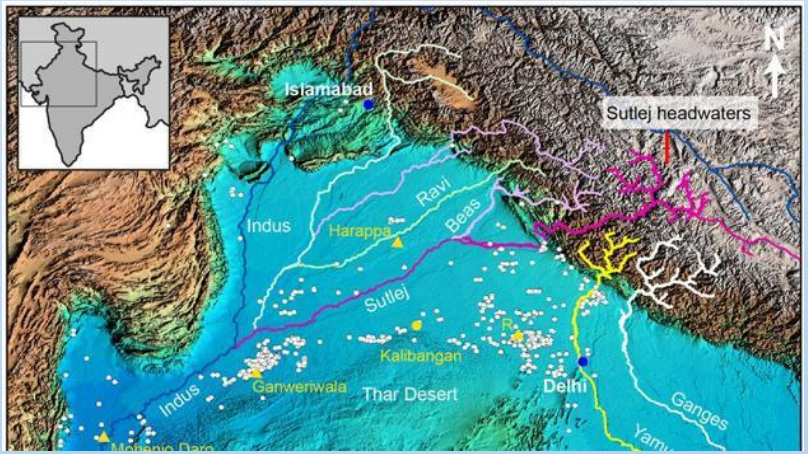

आयोजनकर्ता

भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन
अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार
4 कालिदास मार्ग, देहरादून-248001
www.iirs.gov.in